विचार बिन्दु

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से बांटो। –अथर्ववेद

अपने लोकतंत्र को हमें ही मज़बूत करना है!

संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने 19 नवंबर, 1863 को दिए गए गेटिसबर्ग सम्बोधन में, जिसकी गणना दुनिया के उत्कृष्ट एवं सर्वाधिक लोकप्रिय भाषणों में की जाती है, कहा था: ये मृतक व्यर्थ नहीं मरे होंगे– कि यह राष्ट्र, ईश्वर की कृपा से, स्वतंत्रता का एक नया जन्म प्राप्त करेगा; और कि जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए चलने वाला शासन इस धरती से लुप्त नहीं होगा। इस भाषण में आए वाक्यांश 'जनता का जनता के द्वारा, जनता के लिए चलने वाला शासन को लोकतंत्र की सर्वाधिक लोकप्रिय परिभाषा के रूप में उद्धृत किया जाता है। बहुत बार सोचने का मन करता है कि कोई शासन जनता का और जनता के द्वारा तथा जनता के लिए कैसे हो सकता है? यह भी सोचने का मन करता है कि क्या इस परिभाषा पर भारत का आज का लोकतंत्र खरा उतरता है? मैं सोचने की कोशिश करता हूं कि अपने देश के लोकतंत्र में मेरी, एक सामान्य नागरिक की क्या भूमिका है? हर पांच बरस बाद चुनाव होता है और मैं वोट डाल आता हूं। इसके अलावा? यह सवाल मैं ख़ुद से इसलिए करता हूं कि मैं एक मध्यमवर्गीय नागरिक हूं। जो निम्न वर्गीय हैं, उनके लिए दो वक़्त की रोटी जुटाने का संकट ही इतना बड़ा है कि वे कुछ और सोच ही नहीं सकते। और जो उच्च वर्गीय हैं, उनके सामने कोई संकट है नहीं। वे तो सरकारों को अपने इशारों पर नचाते हैं। सरकारें भी उनकी ही परवाह करती हैं। उनके लिए सारी सुख सुविधाएं जुटाने को व्याकुल रहती हैं। बचते हैं मेरे जैसे मध्यमवर्गीय लोग।

सवाल यह भी उठता है कि आखिर मध्यमवर्ग में कौन आते हैं। आम तौर पर हम मध्यमवर्ग को उसकी आय के अनुसार परिभाषित करते हैं। प्यू रिसर्च सेण्टर ने 2021 में बताया था कि भारत की लगभग 31 प्रतिशत आबादी मिडिल इनकम श्रेणी में आती है। अब इसके साथ यह तथ्य और मिलाकर देखें। वर्ल्ड इनइक्वलिटी डेटाबेस के अनुसार भारत की राष्ट्रीय आय का लगभग 57 प्रतिशत शीर्ष 10 प्रतिशत लोगों के पास है। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत में मध्यमवर्ग आकार में तो बड़ा है लेकिन उसके भीतर ऊपर और नीचे में बहुत अंतर है। और यही अंतर उसकी प्राथमिकताओं और नागरिक सक्रियता को भी प्रभावित करता है। जो नीचे है वह ऊपर जाना चाहता है और इसलिए वह स्थिरता और नीतिगत निरंतरता के पक्ष में जा खड़ा होता है। लेकिन अपनी असुरक्षा के चलते वह जोखिम लेने से भी कतराता है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए हम देखें कि भारतीय मध्यमवर्ग लोकतंत्र में अपनी भागीदारी कैसे निबाह रहा है। 2019 के लोकसभा चुनावों में राष्ट्रीय मतदान लगभग 67 प्रतिशत रहा, लेकिन मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई जैसे महानगरों में 55-60 प्रतिशत ही रहा। असल में यही शहरी मध्यमवर्ग राजनीति की बात तो बहुत करता है लेकिन मतदान के प्रति उदासीन रह जाता है। मतदान कर देने के बाद भी, यह मध्यमवर्ग अपनी असुविधाओं को लेकर शायद ही कभी मुखर होता हो। यातायात, प्रदूषण, जल निकासी, नागरिक सुरक्षा, कर व्यवस्था, सरकारी फिज़ूलखर्ची, वीआईपी जन के कारण होने वाली असुविधा – किसी भी मुद्दे पर वह आक्रोशित नहीं होता। और नागरिकों की यह उदासीनता हर स्तर पर व्याप्त है। मुहल्ले की सोसाइटियों में भी वह बहुत कम सहभागिता करता है। हां, वह अपनी बात सोशल मीडिया पर ज़रूर कहता है। यह नई विकसित हुई प्रवृत्ति है।

इधर जो बड़ा बदलाव आया है वह इण्टरनेट के प्रसार की वजह से आया है। (2023) के अनुसार भारत में इण्टरनेट के उपभोक्ता 800 मिलियन से अधिक हैं। इस डिजिटल विस्तार ने नागरिकों को मुखर तो बनाया है लेकिन उनकी नागरिक सहभागिता को सघन नहीं किया है। हर मुद्दे पर ऑनलाइन अभियान चला दिए जाते हैं, जिनकी उम्र बमुश्क़िल 24 से 72 घण्टे होती है। फिर कोई नया मुद्दा आ जाता है। नागरिक खुश है कि उसने डिजिटल मंच पर ख़ुद को नागरिक साबित कर दिया है। जबकि हक़ीक़त में इसका कोई प्रभाव देखने को नहीं मिलता है। इस आभासी सक्रियता ने उसे और अधिक निष्क्रिय बना दिया है।

कुल मिलाकर देश का आम नागरिक राजनीतिक विमर्श और निर्णय तंत्र से दूर होने को विवश है। उसकी इस निष्क्रियता ने राजनीतिक विमर्श को दो ध्रुवीय बना डाला है।। संतुलनकारी और तर्कप्रधान आवाज़ें निरंतर कमज़ोर हो रही हैं। राजनीतिक दल अपने-अपने स्वार्थों के अनुरूप काम कर रहे हैं। न नागरिक की उन्हें परवाह है और न नागरिक का उनसे कोई ख़ास रिश्ता है, जो होना चाहिए था।

असल लोकतंत्र उन संस्थाओं से बनता और चलता है जो स्वतंत्र और निष्पक्ष होती हैं। भारत के संविधान निर्माताओं ने बहुत सोच विचार कर ऐसी संस्थाओं का ताना-बाना बुना था। न्यायपालिका, चुनाव आयोग, विश्वविद्यालय, नियामक निकाय, कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, प्रेस – ये सब मिलकर लोकतंत्र को आकार देती हैं। लेकिन हमारे देखते-देखते इनका बहुत द्रुत क्षरण हुआ है। न्यायालयों में लम्बित मामलों की संख्या बढ़ती जा रही है, न्याय मिलने में होने वाली देरी बढ़ती जा रही है। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता लगातार कम हो रही है, चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल दर सवाल उठते जा रहे हैं और जिन्हें उन सवालों का जवाब देना था, वे चुप्पी साधे बैठे हैं, मीडिया की हालत यह है कि वह केवल एक पक्ष का भोंपू बनकर रह गया है। जिन मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए उनसे उसने पूरी तरह आंखें मूंद रखी है।

लेकिन जो हो रहा है उसके लिए केवल ये ही ज़िम्मेदार नहीं हैं। जिन्हें इनसे सवाल करने चाहिए थे, वे भी तो मौन और उदासीन हैं। यहां मेरा आशय इस देश के आम नागरिक से है। हमारे देखते-देखते लोकतंत्र के स्तंभ कमज़ोर किए जा रहे हैं और हम मौन हैं, जैसे यह हमारे नहीं किसी और के लोकतंत्र का मामला हो।

आखिर हमारी उदासीनता का सबब क्या है? क्या यह कि हम भयभीत हैं? अगर हमने प्रतिरोध कर दिया तो कहीं उस प्रतिरोध की सज़ा हमें न मिल जाए! क्या यह कि उदासीनता हमारे सोच का ही हिस्सा है –'कोऊ नृप हो हमें का हानि' वाला सोच! या यह कि हममें से हरेक के अपने-अपने कष्ट भी कम नहीं हैं। हमारा युवा बेरोज़गारी के संकट से ही नहीं उबर पा रहा है। नौकरियां कम हो रही हैं, शिक्षा महंगी होती जा रही है और जो शिक्षा उसे दी जा रही है वह उसकी दक्षता में कोई ख़ास वृद्धि भी नहीं कर रही है।

यह भी एक तथ्य है कि भारत में राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदे का बहुलांश कॉर्पोरेट घरानों से आता है, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि राजनीतिक दल भी उनके हितों की ही अधिक फिक्र करते हैं। आम नागरिक के छोटे चंदे की उन्हें परवाह होती ही नहीं है। आम नागरिक उनकी प्राथमिकता में बहुत नीचे होता है। वह जानता है कि उसकी परवाह किसी को नहीं है। इसलिए नागरिक भी राजनीतिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रहता है।

कुल मिलाकर देश का आम नागरिक राजनीतिक विमर्श और निर्णय तंत्र से दूर होने को विवश है। उसकी इस निष्क्रियता ने राजनीतिक विमर्श को दो ध्रुवीय बना डाला है।। संतुलनकारी और तर्कप्रधान आवाज़ें निरंतर कमज़ोर हो रही हैं। राजनीतिक दल अपने-अपने स्वार्थों के अनुरूप काम कर रहे हैं। न नागरिक की उन्हें परवाह है और न नागरिक का उनसे कोई ख़ास रिश्ता है, जो होना चाहिए था। यह स्थिति राजनीतिक दलों और सरकारों को तो रास आ रही है। उन पर नियंत्रण कम होता जा रहा है। वे अपनी मनमानी करने के लिए खुल्ले छोड़ दिये जा रहे हैं। कोई रोक टोक नहीं, कोई जवाबदेही नहीं। कोई ज़िम्मेदारी नहीं। सब कुछ अपने मन मुताबिक करने की पूरी आज़ादी। सवाल पूछने वाला एकदम मौन। इतना सब कुछ देश में घटित हो रहा है लेकिन कहीं से चूं तक की आवाज़ नहीं। यह स्थिति लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं है।

अब यह नागरिक को ही सोचना पड़ेगा कि वह सब कुछ से उदासीन रहकर सत्ता को (चाहे वह किसी भी दल की हो) मनमानी करने दे या मुखर और सक्रिय होकर उसकी निरंकुशता पर रोक लगाए। करने को एक आम नागरिक बहुत कुछ कर सकता है। वह स्थानीय निकायों और जन सुनवाइयों में नियमित भागीदारी कर अपनी हताशाओं और अपेक्षाओं को अभिव्यक्त कर सकता है। इतना करना भी निरंकुशता पर लगाम लगाएगा। पारदर्शिता की अपेक्षा कर सकता है और सूचना के अधिकार को कमज़ोर करने के प्रयत्नों का विरोध करते हुए जो अधिकार अभी भी उसके पास हैं उनका उपयोग करते हुए सत्ता को जवाबदेह बने रहने को विवश कर सकता है। जिन मंचों पर भी वह जा सके उन मंचों पर स्वस्थ, तर्कपूर्ण और शालीन बहसों के माध्यम से अभिव्यक्ति की आज़ादी की अलख जगाए रह सकता है। स्वतंत्र प्रेस का समर्थन कर और उसकी यथासंभव सहायता कर उसे मज़बूत कर सकता है। राजनीति से दूर रहने को अपना गुण मानने की बजाय राजनीति में सक्रिय होकर उसे सकारात्मक आकार दे सकता है। ऐसे बहुत सारे काम हम सब कर सकते हैं।

मुद्दा यह नहीं है कि हम किसी ख़ास दल का समर्थन या विरोध करें। यह चयन हरेक का अपना हो सकता है और इसका सम्मान किया जाना चाहिए। लेकिन ऐसा करते हुए हमारी आस्था लोकतंत्र के प्रति बनी रहे, हम उसे कमज़ोर न होने दें और अपनी क्षमता भर उसे मज़बूत बनाएं– यही इस समय की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

साम्राज्यवादी शक्तियों के दबाव से मुक्ति हेतु स्वावलंबी कृषि एवं ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था आवश्यक

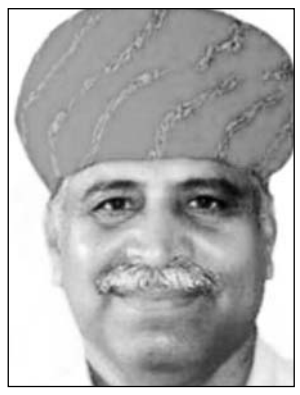

राजपाल जाट

सीता स्वयंवर में एकत्र प्रतिभागी राजाओं को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है, अच्छे राजा एवं खोटे राजा। इसी प्रकार का विभाजन दैव और दानव के रूप में है। इसी सन्दर्भ में साम्राज्यवादी शासकों का भी विवरण है। इसके विपरीत व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष को समर्पित योद्धाओं का भी वर्णन है। 'राम भी जीवित है और रावण भी जीवित है' इस लोकोक्ति का भावार्थ संकेत करता है कि अच्छाई और बुराई दोनों मानव मन में रहती है। अच्छाई को ग्रहण कर इसकी स्थापना के लिए कार्य करने वाले दैव और स्वयं को पोषित करने के लिए दूसरों की स्वतंत्रता एवं संपत्ति को छीनने वालों को दानवी प्रवृत्ति वाले के रूप में निरूपित किया गया है।

अभी अपनी क्षुद्र स्वार्थपूर्ति के लिए अमेरिका द्वारा वेनेजुएला पर कब्जा करना साम्राज्यवादी घटना है। साम्राज्य को पोषित करना भारत में क्षुद्र स्वार्थ वाला कार्य माना गया है। इसलिए चीन में प्राप्त एक शिलालेख के अनुसार भारत द्वारा चीन पर 2000 वर्षों तक शासन किया गया किंतु तलवार के आधार पर नहीं बल्कि ज्ञान की पुस्तक के आधार पर, इसका उल्लेख दोनों प्रवृत्तियों में श्रेष्ठ प्रवृत्ति ज्ञान को ही माना है। अमेरिका की अर्थव्यवस्था विश्व के कमजोर देशों की लूट पर ही पल्लवित हो रही है। इसी हेतु से अमेरिका पाशविक शक्ति के आधार पर फल-फूल रहा है। इराक जैसे देश के शासक की निराधार आरोपों के आधार पर निर्मम हत्या भी इसी का उदाहरण है। दूसरे की संपत्ति को हड़पना भारत की ग्राम संस्कृति में निंदनीय श्रेणी में है। 'मातृवत परदारेषु, पर द्रवेषु लोष्टवत, आत्मवत सर्व भूतेषु, य: पश्यति स पंडित:। यानि दूसरों की पत्नि को माता के समान, दूसरे के धन को धूल के समान, प्राणीमात्र को स्वयं की आत्मा के समान समझने वाले को ही पंडित संबोधित किया गया है। इसी के अनुसार 'वसुधैवकुटुंबकम' की भावना को ग्रहण करने योग्य उदात्त माना गया है। देश की अर्थव्यवस्था में भी इसी मन की छाया दिखाई देती है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में उत्पादक एवं उत्पादन के लिए सहायकों के सम्मान में ऊंच नीच की भावना नहीं है। इसी हेतु से सभी के गरिमामय जीवकोपार्जन की रचना दृष्टिगोचर होती है। इसी के अनुसरण में कृषि के उत्पादन के बाद किसान अपने उपासना स्थल, कृषि में सहायक के रूप में कार्य करने वाले लकड़ी, लोहा के यंत्र एवं उपकरण बनाने वाले, दैनिक उपभोग के लिए उपयोगी मिट्टी, धातु की सामग्री तैयार करने वाले तथा सेवा भाव से कार्य करने वाले सभी पुरुषार्थियों को अन्न पहुंचाने के बाद अपने घर पर लेकर जाता है। ग्राम को परिवार इकाई के रूप में स्वीकार कर व्यवहार करता है। इसीलिए 'गांव की बेटी', 'गांव का जमाई' जैसी शब्दावली सहज रूप से मुख पर रहती है। इस व्यवस्था में लूट की संभावनाएं नगण्य हो जाती है। शोषण, शोषित, वंचित एवं बेरोजगारी जैसे शब्द अप्रासंगिक हो जाते हैं। परस्पर सहयोग एवं प्रेम-भाईचारा की भावना से ओतपोत जीवन आनंदित रहता है। जागने से लेकर सोने तक संगीत का स्वर आनंद को बढाता है। ग्राम संस्कृति पर निरंतर आक्रमण एवं आघातों के कारण इस आनंदमय जीवन में टूटन एवं विकृति आई है। इसी जीवन का प्रभाव था कि गांव के उपभोग से बचने वाली वस्तुएं एवं सामग्री का नगर वासी व्यापार करते थे, जो देश के बाहर विश्व स्तर पर चलता था।

उस कालखंड में विश्व के व्यापार में भारत की भागीदारी 23 प्रतिशत तक थी। भारत के कपड़े एवं उनसे तैयार सामग्रियों के लिए विश्व जन तरसते थे, इसीलिए वे भारत का कपड़ा सोने के बराबर खरीदने को तैयार रहते थे। इस ग्रामीण अर्थव्यवस्था ने भारत को सोने का भंडार बनाया था। एक हाथ में शास्त्र और एक हाथ में शस्त्र रखने के संबंध में भगवान परशुराम ने प्रकट किया कि कुछ व्यक्ति तो शास्त्र से समझ जाते हैं किंतु कुछ शास्त्र से नहीं समझते उन्हें समझाने के लिए शस्त्र की आवश्यकता होती है। इस सिद्धांत की उपेक्षा करने के कारण दैवीय शक्तियों में शक्ति की उपासना पर विराम लग गया। इसीलिए आक्रांताओं के मन ललचाये। शक्ति की साधना कमजोर होने से बाहरी आक्रान्ताओं ने भारत के धन को लूटने के लिए निरंतर आक्रमण किए। ग्राम संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट करने के लिए अंग्रेजी शासकों ने तो नियोजित ढंग से कार्य को गति दी।

भारतवासियों के मन में हीन भावना पैदा की। इससे वे अंग्रेजीयत एवं अंग्रेजों को श्रेष्ठ मानने वालों की जमात तैयार कर सके। उनमें से अनेकों ने देश की अर्थ रचना के रणनीतिकारों के रूप में स्वयं को स्थापित कर अंधानुकरण की ओर देश को धकेल दिया। उत्तम ग्राम संस्कृति को पिछड़ेपन के प्रतीक के रूप में निरूपित करना आरंभ कर दिया। दुष्परिणामत: अमेरिका को भारत को धमकाने का अवसर प्राप्त हो गया। हमारी ग्राम अर्थव्यवस्था में इस प्रकार का कोई अवसर किसी भी अमेरिका जैसे देश को प्राप्त नहीं हो सकता था। विश्व में भारत सबसे युवा देश है, जो प्राकृतिक संसाधनों में धनी है, सबसे बड़ा उपभोक्ता समूह भारत के पास है, कुल उपलब्ध भूमि में से 25 प्रतिशत से अधिक भूमि कृषि योग्य है, देवात्मा हिमालय के कारण ठंडी हवाओं से बचाव है, छह ऋतु प्रकृति की कृपा से प्राप्त है, कृषि कार्य में निपुण एवं विशेषज्ञता रखने वालों का समूह है, गंगा-यमुना जैसी बारहमासी बहने वाली नदियों के कारण विशाल उपजाऊ भूभाग पवित्र जल उपलब्ध है। उत्पादक एवं उपभोक्ताओं के विश्व में सबसे बड़े समूह के कारण भारत की अर्थव्यवस्था स्वयंपूर्ण है। हमें अमेरिका जैसे देश की उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी उनको हमारी है। स्वावलंबी कृषि एवं ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था होने पर किसी भी बाहरी शक्ति की दाब-धौंस की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना नहीं रहती है। आवश्यकता है स्वाभिमान से खड़े होकर स्व को जगाने की, वास्तविक रूप से स्वाभिमान एवं रणकौशल के साथ हुंकार करने की। अभी भी गांव संस्कृति की ओर लौट चलने का अनुकूल अवसर है। इसका आरंभ कृषि भूमि को संरक्षित रखते हुए खेत को पानी- फसल को दाम-युवाओं को काम के आधार पर किया जा सकता है। इससे ही लूट आधारित उपनिवेशवादी व्यवस्था समाप्त हो सकेगी। साम्राज्यवादी शक्तियां आंख उठाकर देखने का भी दुस्साहस नहीं करेगी।

इस विषय में 5 अक्टूबर 1945 को महात्मा गांधी की ओर से पंडित जवाहरलाल नेहरू को लिखे हुए पत्र को समयाकुल बनाकर मार्ग चयन करने की आवश्यकता है। इस पत्र के उत्तर में पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा देहातियों को संकीर्ण मानसिकता एवं पिछड़ेपन के प्रतीक बताने वाले तथ्य को सहज रूप से सद्भाविक भूल के रूप में स्थापित किया जा सके। इसके बाद गांधी द्वारा लिखे गए पत्र का पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कोई उत्तर नहीं दिया। गांधी नेहरू के मध्य हुए पत्राचारों में ये तीन अंतिम पत्र स्वतंत्र भारत के शासकों की मानसिकता को समझने के लिए अवलोकन करने योग्य है। किसी भी गाड़ी की स्टेयरिंग पर बैठे हुए चालक की चूक से कितनी बड़ी दुर्घटना हो सकती है, इसे समझने के लिए भी ये तीनों पत्र महत्वपूर्ण है।

–रामपाल जाट,
राष्ट्रीय अध्यक्ष किसान महापंचायत

जीवट का ही नाम है जीवन

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपना जज़्बा और जीवट बनाए रखते हैं और पूरे सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पुनः उठ खड़े होते हैं

राजेन्द्र भाणावत

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उतार -चढ़ाव आते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो परिस्थितियां विपरीत होने पर या किसी प्रकार का संकट आने पर, विचलित हो जाते हैं। वे अपने भाग्य एवं ईश्वर को कोसने लगते हैं। इसके विपरीत, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपना जज़्बा और जीवट बनाए रखते हैं और पूरे सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ पुन: उठ खड़े होते हैं एवं जीवन के संघर्ष को पूरे मनोयोग से के आगे बढ़ाते हैं।

इस आलेख में हम चार ऐसे साधारण व्यक्तियों की बात करेंगे जिनको मैने निकट से देखा और जिन्होंने परिस्थितियों से हार नहीं मानी अपितु असाधारण साहस के बल पर अपने जीवन को भरपूर जीने का प्रयास किया। इसका उद्देश्य यही है कि इससे पाठक प्रेरणा ले सकें।

पहला उदाहरण है एक डॉक्टर का। एम बी बी एस के दूसरे साल में पढ़ने वाली यह खूबसूरत , चुलबुली और लोकप्रिय 20 वर्ष की छात्रा जब लूना पर घर से कॉलेज जा रही थी तो पीछे से बस ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बस इसे लूना सहित घसीटते हुए कुछ दूरी तक ले गई। इस दुर्घटना में उसके कई फ्रैक्चर हुए तथा खून भी बहुत बह गया। उसे मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में भरती कराया गया जहां कई दिनों तक यहां जीवन और मृत्यु के बीच झूलती रही। इसे वॉटर बेड पर रखा गया और चूंकि वह बहुत लोकप्रिय थी, सभी इसके स्वस्थ होने की दुआएं कर रहे थे। उन्हीं दिनों में संयोग से मैं अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव का उप संयोजक होने के नाते जया बच्चन के संपर्क में आया जो इस फिल्म महोत्सव की प्रमुख आयोजक थीं। मैंने जया जी को इस छात्रा की स्थिति के बारे में बताया और अनुरोध किया कि यदि वह एक बार उससे मिल सके तो उसे खुशी मिलेगी क्योंकि वह अमिताभ बच्ची की " फैन" थी।

जया जी ने मेरी बात मानी और तत्काल मेरे साथ अस्पताल जाकर इस छात्रा से मिलीं। उसका एक ही प्रश्न था कि "अमित जी कैसे हैं? ". उदयपुर में उपयुक्त इलाज की व्यवस्था न होने के कारण उसे मुंबई ले जाया गया। जया जी ने मुझे अमिताभ बच्चन का सीधा संपर्क का एक फोन नंबर दिया और कहा कि आवश्यकता होने पर मैं उनसे फोन कर सकता हूँ।जब यह छात्रा मुंबई के अस्पताल में भर्ती थी तो मैने अमिताभ बच्चन को सीधे फोन किया और आग्रह किया कि वे अस्पताल को केवल ध्यान रखने के लिए कह दें। बाद में वहां के डॉक्टर ने बताया कि उसके लिए तो अमिताभ बच्चन का फोन आया है। इलाज के दौरान जान बचाने के लिए पहले घुटने के नीचे तक तथा बाद में घुटने के ऊपर तक पैर काटना पड़ा।

धीरे-धीरे वह स्वस्थ तो हो गई किंतु जीवन भर के लिए उसने एक पाँव को खो दिया। इसके बावजूद उसने हिम्मत नहीं हारी। वह जयपुर फुट लगाने के लिए जयपुर आई और जयपुर फुट के सहारे उसने अपनी मेडिकल की पढ़ाई जारी रखी। मैंने उसका कष्ट उस समय देखा है जब जयपुर फुट लगाने के बाद उसके पैर में घाव हो जाता था जिसमें खून निकलता था। यहां एक और बात उल्लेखनीय है कि उसी के सहपाठी के साथ उसका विवाह हुआ. एम बी बी एस पूरा करने के बाद उसने रेडियोलॉजी में एम डी किया।

आज वह शहर की प्रमुख रेडियोलॉजिस्ट है और दो योग्य बच्चों की माँ है। यह लड़की जयपुर फुट के सहारे देश और विदेश के कई शहरों का भ्रमण कर चुकी है। यदि और कोई लड़की शायद इन परिस्थितियों परिस्थिति जीवन समाप्त करने की बात सोचती, लेकिन इसने विपरीत परिस्थितियों पर अपने साहस और धैर्य के बल पर विजय प्राप्त की।

दूसरा उदाहरण 40 वर्षीय उस युवती का है जिसके दो लड़कियां थीं और पति इंजीनियर थे।उनका जीवन अच्छी तरह चल ही रहा था कि अचानक से अपने पांव में चलने में शिथिलता और दर्द महसूस होने लगा।डॉक्टर ने बताया कि उन्हें "मस्कुलर डिस्ट्रॉफी" है, जिसका कोई इलाज नहीं है। उनके चलने की शक्ति कम होती गई और कुछ ही सालों में इनका चलना बिल्कुल बंद हो गया और ये व्हीलचेयर पर ही रहने लगीं।इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए भी उठा कर ले जाना पड़ता। इनका एक हाथ भी काम नहीं करता है। गत लगभग 12 वर्षों से वे व्हीलचेयर पर हैं। इन सबके बावजूद ये एक स्वैच्छिक संस्था की मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्य कर रही हैं। ये व्हीलचेयर पर बैठे-बैठे और केवल एक जो हाथ ठीक काम करता है , उसकी सहायता से संस्था में काम करने वाले सैंकड़ों कार्मिकों को जीवन कौशल का प्रशिक्षण दे चुकी हैं। संस्था के काम की मॉनिटरिंग भी वे ही करती हैं। वंचित वर्ग की महिलाओं और बालिकाओं का मार्गदर्शन करती हैं। उनके चेहरे पर मैंने कभी मायूसी

नहीं देखी और उनसे मिलने पर ऊर्जा का संचरण होता है। संस्था से निकली हुई बालिकाएं उनसे मिलने को सदैव इच्छुक रहती हैं। ये अपने पति की सहायता से कार में बैठकर संस्था की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती हैं। उन्होंने अपनी शारीरिक अक्षमता को अपने लक्ष्य के लिए निरंतर काम करने में कभी बाधा नहीं बनने दिया। इस प्रकार उन्होंने जीवन को उद्देश्य पूर्ण बना लिया है। उनको अनेक सम्मान से भी सरकार और संस्थाओं द्वारा नवाज़ा गया है। उनकी आयु अब लगभग 60 वर्ष है और वे आज भी पूरी ऊर्जा के साथ में काम में लगी हुई हैं।

तीसरा उदाहरण

राजस्थान बोर्ड में योग्यता सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली एक लड़की का है। इनका विवाह 21 वर्ष की आयु में हो गया, जब यह कॉलेज में अध्ययन रत थीं।विवाह के लगभग 10 दिन बाद ही किसी पर्यटन स्थल पर एक होटल की छत से अंधेरे में अचानक गिरने के कारण उनके कूल्हे की हड्डी टूट गई। सामान्यत: कूल्हे की हड्डी का फ्रैक्चर वृद्धावस्था में होता है। किंतु मात्र 21 वर्ष वर्ष की आयु में उनके साथ यह हुआ। इनका ऑपरेशन किया गया और उनको पूरी तरह ठीक होने में लगभग 1 वर्ष लग गया। इसके बाद कॉलेज की पढ़ाई पुन: प्रारंभ प्रारंभ की और अंठोजी साहित्य में एम ए, एम फिल किया। जब लगा कि वापस जीवन पटरी पर आना प्रारंभ हुआ है तभी लगभग सात साल बाद इनके कूल्हे की हड्डी में भयंकर दर्द होना प्रारंभ हो गया और पांव भी थोड़ा छोटा हो गया।इसके कारण कई रातें बहुत कष्ट में गुजारनी पड़ीं। इसके अतिरिक्त भी दमा, एसिडिटी जैसी कई अन्य बीमारियों के कारण लगातार शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ा। इन सब के बावजूद इन्होंने न केवल अपने परिवार और समाज की जिम्मेदारियां को बेहतर तरीके से पूरा किया अपितु एक महाविद्यालय में लंबे समय तक अंठोजी विषय का अध्यापन भी किया। उनके काम करने की गति और उनकी ऊर्जा को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि ये कितने कष्ट से गुजर रही हैं। हड्डी का दर्द बढ़ता गया तो लगभग 12 साल बाद इनका एक बड़ा ऑपरेशन मुंबई में किया गया, जिसमें पूरे कूल्हे को ही बदल दिया गया। इस घटना को भी लगभग 25 वर्ष हो चुके हैं और आज ये लगभग 65 वर्ष की अवस्था में भी पूरे समर्पण, संवेदनशीलता और ऊर्जा के साथ अपनी स्वैच्छिक संस्था, जिसकी ये अध्यक्ष हैं, के माध्यम से वंचित वर्ग की महिलाओं और

बालिकाओं के साथ काम करने में डटी हुई हैं। ये बालिकाओं को अंग्रेजी पढ़ाने के साथ संस्था का भी पूरा प्रबंधन संभालती हैं। इन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य ही निर्धन, वंचित वर्ग की लड़कियों को पढ़ने और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनने में सहायता करने को बना लिया है। इनकी संस्था से जुड़ी हुई लड़कियां आज अपने जीवन में बहुत बेहतर कर रही है और आत्मविश्वास में भी दूसरों से बहुत आगे हैं।

इन्होंने स्वयं के कष्ट को, अपने जीवट के बल पर,जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के बीच में कभी रुकावट नहीं बनने दिया। बस आवश्यकता केवल सकारात्मक सोच की है।

चौथा अंतिम उदाहरण सरकार में उच्च पद पर काम कर चुके एक अधिकारी और उनकी पत्नी का है जो लगभग 15 वर्ष से व्हीलचेयर पर है। उनकी पत्नी की भी लगभग वही स्थिति है जो उदाहरण संख्या दो में दर्शाई गई है। इन्हें भी " मस्कुलर डिस्ट्रॉफी" के कारण, भौतिक रूप से एक स्थान से उठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना पड़ता है। सामान्य स्थिति में इस प्रकार की पत्नी को कोई भी अधिकारी अपने हाल पर छोड़ देता और पत्नी भी हताशा और निराशा में डूबी रहती। किंतु, इस दंपति ने हर नहीं मानी और शारीरिक अक्षमता को अपने जीवन पर हावी होने नहीं दिया। यह देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये गत दो वर्षों में यह 5 – 6 बार देश के विभिन्न भागों जैसे असम, उड़ीसा, केरल, उत्तर प्रदेश, गुजरात ,मध्य प्रदेश आदि की यात्रा कर कर चुके हैं। एक ओर जहां उनकी पत्नी की इस बात के लिए सराहना की जानी चाहिए कि वे अपनी तकलीफ को एक तरफ रखते हुए हर यात्रा में पति के साथ गईं। और पति ने तो हर स्थान पर पत्नी की अक्षमता को एक तरफ रखते हुए ,उनको गोदी में उठाकर और व्हीलचेयर पर जैसे भी संभव था, वायुयान और सड़क यात्रा करके पूरे देश के विभिन्न राज्यों का दौरा किया।

उपरोक्त चार उदाहरण देने का मेरा एक ही उद्देश्य है कि यदि इच्छा शक्ति दृढ़ हो और जीवन का लक्ष्य स्पष्ट हो तो शारीरिक अक्षमता किसी प्रकार आड़े नहीं आती। संभवतया, इसे पढ़ने के बाद कई व्यक्ति जो दुर्भाग्यवश विभिन्न प्रकार के शारीरिक कष्टों का शिकार हो जाते हैं, वे अपनी हताशा और निराशा को त्यागकर, अपने जीवन को पुन: संवारने का और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ाने का प्रयास करने की प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

इन उपरोक्त चारों उदाहरणों में जिन लोगों ने अपने जीवट व का परिचय दिया, उन्हें बस केवल सलाम किया जा सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण होंगे, किंतु मैंने उन्हीं का उल्लेख किया है जिनसे मैं व्यक्तिगत रूप से भली भांति परिचित हूँ।

राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई. ए. एस. अधिकारी)

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 फरवरी, 2026

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, श्रवण नक्षत्र रात्रि 8:48 तक, वारियान योग रात्रि 1:50 तक, शकुनि करण सायं 5:35 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-कुम्भ, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 8:48 तक है। आज मुनि वासुदेव पूज्यनाथ जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:30 तक, शुभ 9:54 से 11:17 तक, चर 2:05 से 3:28 तक, लाभ-अमृत 3:28 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:07, सूर्यास्त 6:15

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

कर्क
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय से समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
व्य